श्री सत्संग सुधा

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

हे प्रिय आत्मन् ! मनुष्य देह धारी समस्त प्रतिमाओं में ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी स्वयं विराजमान है। और दर्शन-श्रवण मात्र समस्त-पदार्थ उनकी सम्पत्ति है अत: ॐ आनन्दमय प्रभु पिता की आज्ञानुसार उनकी सम्पत्ति का सदुपयोग करते रहना मानव कर्त्तव्य है और उनकी आज्ञा के बिना किसी मानव का स्वतंत्रता पूर्वक अपने आज्ञाकारी बनाने की इच्छा करना, कामना करना वर्जित है। अन्यथा क्रमश: दिमागी शक्ति का और दिमागी सम्पत्ति का ह्रास-विनाश करते-करवाते रहेंगे।

स्मृति रहे! अपने आज्ञाकारी बनाने की इच्छा, द्वेष की माता है और द्वेष केवल बैरी दुश्मनों का निर्माता है, तथा वैरी-दुश्मन प्रतिकूलताओं के दाता हैं। कठिन दण्डधारा **श्री गीता अ० ७/२७, अ० १६/२१, अ० ३/४१ आदि में प्रकाशित है।**

इच्छा द्वेष समुत्थेन, द्वन्दमोहेन भारत।
''काम: आत्मानम् नाशनम्''
''काम: क्रोध: ज्ञान-विज्ञान नाशनम्''

भगवन! हम क्या इच्छा करें ?

समाधान– हे प्रिय आत्मन् ! सच्ची-प्रेम भक्ति में प्रकाशित विधि-विधान युक्त ॐ आनन्दमय प्रभु पिता को अपना मालिक बनाने की इच्छा करें। और तदनुसार उनके आज्ञाकारी बनने की इच्छा से उस विधान के अनुसार सब प्रकार के कर्म-धर्म करें, यही इच्छा, यही कामना मानव के महा-मानव बनाने वाली है। यही निरंहकारी भक्ति, प्रेम-भक्ति दिमागी रोग नाशक है अन्यथा परिणाम हानिकारक कर्मो द्वारा मनोमय दिमागी कोष में विष, अग्नि और मानसिक वायु-बवण्डर की वृद्धि करते रहेंगे। तथा १२५ से अधिक रोगों द्वारा दिमाग को उबालते रहेंगे। इस महाघोर दण्ड का नाम है परेशानी। अनेक चित्त विभ्रान्ता मोह जाल समावृता: । हे प्यारे प्रेमियों मेरे ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय नाम-रूप को मत भूलो। मुझे सर्वत्र, सब रूपों में और अपने हृदय दिमाग में मानों।

ॐ शान्तिमय

मनुष्य ज्यों ही यह मानने लगता है, मैं तो कुछ जानने लगा, तभी उसके ज्ञान के द्वार बन्द हो जाते हैं।

Scanned with CamScanner

दम्भ, दर्प और अभिमान के परिणाम का ज्ञान

दम्भो दर्पोऽभिमानश्च क्रोधः पारूष्यमेव च।
अज्ञानं चाभिजातस्य पार्थ संम्पदमासुरीम।।श्री गीता १६/४।।

''असुर'' मनुष्यों के लक्षण

दम्भ, दर्प, अभिमान, क्रोध, कठोर वाणी और अज्ञान यह ''असुर'' मनुष्यों के लक्षण हैं।

प्रश्न- दम्भ किसका वाचक है?

उत्तर- सज्जनता की आड़ में छिपकर किये जाने वाले समस्त तामसी भाव-आचरण दम्भ के अन्तर्गत हैं। जैसे-

झूठ, कपट, चोरी आदि ठगी को सिद्ध करने के लिये वाणी, लेखनी द्वारा प्रिय हितकारक, सदाचारी बनना। अपने को दानी या भक्त प्रसिद्ध करके धोखा देने के उद्देश्य को सिद्ध करना। काम, क्रोध, लोभ आदि दुर्गुणों को शान्त किये बिना ही पाप नाशक मुक्ति व आनन्द शान्ति दाता पण्डा, पुजारी, साधु, महात्मा, पंडित, गुरू आदि उपदेशक ''देवों'' का व प्रजापालकों का स्वांग धारण करना। इत्यादि सात्विक आचरणों की आड़ में तामसी भावों की सिद्धि करने वाले व्यक्तियों को दम्भी-पाखण्डी कहा है।

बहन आनन्द निधि जी
श्री गीता ज्ञान की मर्मज्ञ

प्रश्न- दर्प किसका वाचक है?

उत्तर- प्राप्त धन, जन, भूमि, भवन, पद, प्रतिष्ठाजन्य घमण्ड के भावों का नाम दर्प है।

प्रश्न- अभिमान किसका वाचक है?

उत्तर- ग्रंथों में पढ़कर रटन कर विभिन्न प्रकार के ज्ञान का तथा जाति व वर्णाश्रम का तथा नाम, ग्राम, देश, भेष, भाषा, मान, पद, आयु, विद्या, रूप, धन इत्यादि का व अन्य किसी प्रकार के बड़प्पन के भावों से युक्त अहंकार के भावों का नाम अभिमान है।

प्रश्न- आसुरी सम्पदा किसका वाचक है?

उत्तर- दम्भ, दर्प और अभिमान का नाम आसुरी सम्पदा है। इन दुर्गणों से युक्त राजसी, तामसी मनुष्यों को श्री विश्वपिता आनन्दमय प्रभु निम्न प्रकार से दण्ड प्रदान करते आये हैं

१- हृदय में नाराजगी, उलाहना देने व जिद्दवाद, हठ, जबरदस्ती, कटु व कठोर वचन बोलने की आदत के परिणाम में कलह-क्लेशमय जीवन।

२- समस्त प्राणियों में भोग दर्शन व दोष-दर्शन का स्वभाव तथा दर्शन-श्रवण जन्य प्रतिकूलता और क्रोध।

३- अशान्तिदायक संकल्प-विकल्पों का प्रवाह बहाते हुये विपरीत बुद्धि द्वारा जीवन पर्यन्त तामसी ज्ञान प्रदान करते रहना। विस्तार ज्ञान अ० १६ श्लोक ७ से २१ तक प्रकाशित है। और परिणाम का ज्ञान अ० ९ श्लोक १२ और अ० १८ श्लोक ३५ में

Scanned with CamScanner

"ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय" महामंत्र दिमागी संकटहारी है और ध्यान अमृत दायक है।

दिमागी रोग दमनकारी दिव्य ज्ञान

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

ब्रह्मलीन पूज्य बहन जी द्वारा लिखित ज्ञान की कापी

प्रतिदिन ध्यान लगने से अन्त:करण शुद्ध होगा और आपके हृदय में स्वयं ही समाधान होते रहना सम्भव है। अन्यथा एक दूसरे को हिंसक-स्वार्थी-मूर्ख कथन करते रहने का यह राजसी-तामसी और सात्त्विक ज्ञान का वाद-विवाद अनादि है जिसको देवासुर संग्राम कहते हैं। इस महामारी की चिकित्सा श्री सज्जनों की सेवा से होने का विधान है। अभिमान की चिकित्सा श्री सज्जनों की सेवा से होने का विधान है। अभिमान की चिकित्सा पुजारी भाव से सब रूपों में ॐ आनन्दमय भगवान के दर्शनों के अभ्यास से होती है। कटु भाषण की आदतसत्यप्रिय हितकारक वचन उच्चारण करने से होता है। क्रोध रूपी महामारी की शान्ति सहनशीलता के अभ्यास से होती है। हृदय की अशान्ति और पागलपन की शान्ति ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय श्री भगवान के नाम का मनन व स्वरूप का स्मरण करते रहने से होती है, इत्यादि अनेक रोगों के लिये भिन्न-भिन्न औषधियों और पथ्य-परहेज की आवश्यकता होती है।

परमपद दायक योग शास्त्रकार ने हमें विश्व के मानव समुदाय को चार श्रेणियों में विभक्त करने का आदेश दिया है। मैत्री, करूणा, मुदित,.उपेक्षा अर्थात् श्री आनन्द दाताओं से मित्रता, आनन्द मार्गी प्रेमियों के साथ प्रेम, राजसी समुदाय पर दया और तामसी मनुष्यों से उपेक्षा। यह सिद्धान्त शास्त्र प्रमाण तो है ही परन्तु युक्ति से भी हितकर सिद्ध होता है। वर्तमान में श्री ध्यानमग्न प्रेमियों के आदर्शों से भी सत्य हो रहा है और अनुभव से भी यह सिद्धान्त सात्त्विक है। हमारे श्री आनन्द शक्ति दायक महापुरुष भगवान ने भी यही किया। कठपुतलीवत ॐ श्री गुरु भगवान के शरणागत हुये अर्थात् आत्म-समर्पण रूप मित्रता की, श्री सतसंगियों से प्रेम किया, राजसी मनुष्यों को श्रद्धालु बनाने में प्रयत्नशील रहे। यह वास्तविक दया का प्रयोग है और तामसी समुदाय से उपराम हुये, केवल वैराग्य ही किया सो बात नहीं। श्री आपके जीवन में ठगधनियों के साथ बीसों वर्ष बहुत संग्राम भी हुआ।

हमारे पूज्य ग्रन्थ गीता तथा रामायण तो तामसी समुदाय का विनाश करने की स्पष्ट घोषणा कर रहे हैं। परन्तु हम लोग सैनिक अधिकारी नहीं है। वर्तमान में यह कार्य श्री सरकारी कार्यकर्ता सैनिकों का है। हमारे लिये आदेश नहीं है। हाँ ! श्री भगवत् प्रतिकूल मनुष्यों की सेवा, रक्षा, वृद्धि से उपराम होने के लिये सदा-सर्वदा आदेश है। समय परिस्थिति के अनुसार आसुरी व्यक्तियों का डाक्टर बुद्धि से निन्दा-अपमान, तिरस्कार करने का भी विधान बनाया हुआ है। परन्तु तामसी जनों के नानात्व करते हुये भी भगवत् भावों का त्याग कदापि नहीं करना है अन्यथा सर्वनाश के हेतु वैर, द्वेष, क्रोधादि की बीमारी जाग्रत होनी सम्भव है।

हमारा जितना-जितना राजसी-तामसी समुदाय से प्रेम व द्वेष है और उनसे प्राप्त गुण ज्ञान में स्वार्थ है उतनी मात्रा में हम परम आनन्द व परम शान्ति से वंचित भी हैं। श्री विश्वपिता आनन्दमय प्रभु परम दयालु व परम प्रेमी होने पर भी न्यायकारी हैं।

ॐ शान्तिमय !

Scanned with CamScanner

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

सन्त वचन

जीवन के उद्देश्य को जानने वाला ही मानव कहलाने का अधिकारी है। वास्तविक उद्देश्य आत्म साक्षात्कार है।

जीवन के सुअवसर को व्यर्थ विवाद अथवा व्यसनों मे खो बैठना मूर्खता की पराकाष्ठा समझना चाहिये।

जीवन में एक ॐ आनन्दमय भगवान की उपासना से व्यष्टि को समष्टि मे मिलादें यही मानवता की पूर्णता है। जीवन को श्रेष्ठ एवं प्रशंसनीय बनाने के लिये श्री विश्वशांति शास्त्र के उपदेशों को व्यवहार में लाना चाहिये।

जीवन मे जो अहर्निश साथ देता है वही हम सबका अभिन्न सखा है। वह है परम सुहृद परमेश्वर जीवन को उज्जवल, तेजस्वी एवं प्रकाशमय बनाओं। वर्चस्वी जीवन ही वास्तविक जीवन है।

जीवन मे विघ्न-बाधाएँ आती हैं, उन्हें सहर्ष स्वीकार करते हुये आगे बढ़ना चाहिये। विघ्न-बाधाओं में उलझकर हतप्रभ हो जाना पुरूषार्थ नहीं है।

जीवन सुसंग से सुधरता है और कुसंग से ही अवनति को प्राप्त होता है। अत: संग समझकर करें। जीवन मे महान बनना कठिन है, पर परिश्रम से सफलता साध्य है। संयम और साधना महान बनाते हैं।

जीवन इस विश्व-वाटिका का अनोखा पुष्प है– जो विषयों के आतप से मुरझा जाता है। जीवन में नित्य नये मित्र ॐ आनन्दमय अनुरागी बनाना अच्छा है, पर एक भी शत्रु बनाना बुरा है।

जीवन की अन्तिम परीक्षा एक ही बार होती है– जिसका फल अच्छे-बुरे कर्मो पर निर्भर करता है। जीवन में किसी को अहंकारी बुद्धि द्वारा आज्ञा देना न सीखकर स्वयं ॐ आनन्दमय प्रभु की आज्ञा पालन करना सीखो। तभी महान बनोगे।

जीवन सुख की खान है, किन्तु उसको खोदकर सुखरत्न की निधि निकालने की विधि सीखनी होती है। जीवन में विषय सुख को वैसा ही समझो जैसा दाद का खुजलाना-प्रथम क्षणिक आनन्द फिर असहय वेदना। जीवन दूसरों के सेवार्थ एंव जीवन में अनेक उलझनें आयेंगी, सुलझने का एक मात्र उपाय सत्पथ का अनुसरण करना है।

सत्पथ क्या है? सच्ची प्रेम भक्ति में विधान को पढ़ें। (श्री विश्वशान्ति आश्रम से प्रकाशित है।)

जीवन समाप्ति से पूर्व ही बुद्धिमान अपने सच्चे ध्येय की पूर्ति कर लेता है। जीवन को तुच्छ स्वार्थों में लगाकर सच्ची मानवता को गर्त में डालना है। अत: खोटे स्वार्थ से बचो। जीवन में दूसरों को सुधारने से पूर्व अपने मार्ग के काम-क्रोधादि दुष्कर्म को दूर करो।

जीवन सुख-शान्ति, प्रकाशमय तभी होगा जब अशान्ति और अज्ञान का समूलोच्छेद होगा। यह संभव है– साधन से, सत्संगति से।

जीवन का निर्माण स्वयं के हाथ में है, पवित्रता एवं पापात्मा का निर्णय कर्तव्यानुसार होता है। जीवन में न्याय का अपमान न करना ही वीरता है। न्याय का निर्णय शास्त्रों में है।

जीवन में कामना-पूर्ति की घृणित लिप्सा को त्याग दो। कामना पूर्ति की लिप्सा अत्यंत गर्हित होती है। जीवन में सब के विश्वासपात्र बनो, पर किसी के साथ विश्वासघात मत करो। विश्वासघात महाघातक है।

जीवन की समाप्ति होने से पहले ही भूल सुधार लें।

ॐ शांतिमय

Scanned with CamScanner